Dr.J.P Maurya Department of economics Adarsh College Rajdhanwar Sem -6 core -13 (Public finance)

Scanned by CamScanner

2) Define Public finance and distinguish between :-
(a) Private finance and Public finance
(b) Public goods and private goods.

लोकवित्त को परिभाषित कीजिए तथा
(a) निजी वित्त एवं लोकवित्त तथा
(b) निजी वस्तु एवं सार्वजनिक वस्तु मे अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर राजस्व वर्तमान समय में अर्थशास्त्र का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। सरकार की आय व्यय का अध्ययन करने के लिए राजस्व का विकास वैज्ञानिक तरीके से किया गया है। अंग्रेजी का Public finance दो शब्दों Public जिसका अर्थ जनता और finance जिसका अर्थ होता है वित्त, के मिलने से बना है। लोकवित्त वह विज्ञान है जो सार्वजनिक संस्थाओं के आय, व्यय, ऋण, वित्तीय प्रशासन एवं वित्तीय नीति का अध्ययन किया जाता है। Public finance हमें यह बताता है कि किस प्रकार सार्वजनिक संस्थाएँ अपनी आय प्राप्त करती है और जन-कल्याण के लिए किस प्रकार उसे खर्च करती है इसलिए राजस्व का संबंध सार्वजनिक संस्थाओं के आय, व्यय के अध्ययन से है।

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने राजस्व को अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया है जिनमें से निम्नलिखित प्रमुख है :-

Scanned by CamScanner

According to Prof. Hugh Dalton :-

" लोकवित्त का संबंध सार्वजनिक संस्थाओं की आय एवं व्यय तथा एक को दूसरे से समायोजित करने की क्रिया से है। "

According to prof. Findley Shirras :-

" लोकवित्त वह विज्ञान है जिसका संबंध सार्वजनिक संस्थाओं के द्वारा प्राप्त आय तथा उनके व्यय करने की पद्धति से है। "

According to prof. R.A. Musgrave :-

" उन जटिल समस्याओं जिनका संबंध सरकार के राजस्व - व्यय की प्रक्रिया है उन्हें परंपरागत रूप में राजस्व की संज्ञा दी जाती है। "

राजस्व
Income

चाणक्य जो अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की महान रचना की उन्होंने ने भी राजस्व के संबंध में कहा कि :-

" प्रत्येक उपक्रम का आरंभ वित्त है। "

Scanned by CamScanner

उन्होंने पुनः कहा कि।-

"Money make the mayor go"

Difference between public finance and Private Finance।-

प्रायः यह समझा जाता है कि Public finance और Private finance दोनों समान है क्योंकि दोनों समान सिद्धांत पर काम करता है और दोनों का उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना है लेकिन जहाँ निजी वित्त में व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है लोकवित्त का उद्देश्य सामूहिक आवश्यकताओं को पूरा करना है।

इस तरह, निजी वित्त और लोकवित्त में काफी समानताएँ है तो काफी अंतर भी है और इनके बीच के मुख्य अंतरों को नीचे के बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।-

(i) Adjustment of Income and expenditure :-
लोकवित्त और निजीवित्त में मुख्य अंतर उनके आय तथा व्यय के समायोजन है क्योंकि व्यक्ति अपनी आय के आधार पर ही खर्च को निश्चित करता है जबकि राज्य पहले व्यय को उसके बाद उस व्यय

Difference bet^n Public finance and Private finance
(i) Adjustment of Income and expenditure
(ii) Expenditure on defence
(iii) Difference in adequacy of resources
(iv) Nature of Budget
(v) Difference in secrecy of budget
(vi) Provision for the future 4
(vii) Difference in organisation

की पूर्ति के लिए साधन एकत्रित करते है इसलिए Prof. Dalton ने कहा है कि :-

"एक व्यक्ति अपनी आय के अनुसार व्यय को निश्चित करता है जबकि एक राजकीय संस्था अपनी व्यय के अनुसार निश्चित करती है।"

(ii) Expenditure on Defance :-

लोकवित्त और निजीवित्त के सुरक्षा व्यय मे भी अंतर होता है। सरकार अपनी आय का एक महत्वपूर्ण भाग सुरक्षा पर व्यय करती है ताकि देश को बाहरी आक्रमण से बचाया जा सके लेकिन निजी व्यक्तियों को इसकी चिंता नहीं होती।

(iii) Difference in adequancy of resources :-

व्यक्ति की अपेक्षा सरकार के साधनों की प्रचुरता अधिक होती है तथा बाजार में भी सरकार की साख निजी व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक होती है जिसके कारण सरकार के पास वित्त प्राप्त करने के अनेक ~~स्रोत~~ स्रोत होते है। जैसे -

(a) सरकार घाटे का बजट बनाकर साधन प्राप्त कर सकती है जबकि व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता।

(b) सरकार देश तथा विदेश दोनों से ऋण ले सकती है जबकि व्यक्ति प्रायः देश के अंदर ही ऋण प्राप्त कर सकता है

(c) सरकार को दीर्घकालिन ऋण आसानी से

मिल जाती है जबकि व्यक्ति को इस प्रकार की सुविधा नहीं मिलती है।

(iv) Nature of Budget :-

व्यक्ति तथा सरकार के बजट में भिन्नता होती है। सरकार के लिए घाटे का बजट विशेष रूप से मंदी या युद्ध के समय लाभकारी माना जाता है जबकि व्यक्ति के लिए घाटे का बजट हानिकारक।

वास्तव में व्यक्ति के लिए Surplus बजट अच्छा माना जाता है। इससे व्यक्ति का व्यक्तिगत गुण समझा जाता है और ठीक इसके विपरीत यदि सरकार Surplus बजट बनाती है तो इसका अर्थ यह है कि सरकार द्वारा अधिक tax वसूला गया है और विकास कार्यों पर कम व्यय किया गया है इसलिए सरकार के लिए Deficite (निश्चित) बजट और व्यक्ति के Surplus बजट बनाना अच्छा समझा जाता है।

(v) Difference in Secrecy (गुप्तता) of Budget :-

प्राय: व्यक्ति का बजट गुप्त रहता है और सरकार का बजट सार्वजनिक कर दिया जाता है जिससे बजट की खामियों का पता चलता है और लोगों का विश्वास सार्वजनिक क्रियाओं में बढ़ता है इसलिए सरकार के बजट को बहस आलोचना तथा मूल्यांकन के लिए संसद के दोनों सदनों में पेश किया जाता है और फिर जनता के सामने पेश किया जाता है। कभी-कभी सरकार

Scanned by CamScanner

जनता के सुझाव के आधार पर बजट में आवश्यक परिवर्तन भी करती है लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों जैसे - युद्ध, आपातकाल एवं अशांति में सरकार का बजट कभी - कभी गुप्त भी रखा जाता है।

(vi) Provision for the future :-

सरकार स्थायी संगठन होने के कारण वर्तमान के साथ - साथ भावी पीढ़ियों के लिए भी उत्तरदायी होती है इसलिए सरकार, यातायात, शिक्षा, चिकित्सा, दूरसंचार इत्यादि पर भावी पीढ़ियों के लिए व्यय करती है और सरकार को लंबी अवधि के बाद इसका प्रतिफल मिलता है इसलिए सार्वजनिक उत्तरदायी मानी जाती है।

इसके विपरीत निजी व्यक्ति या फर्म भविष्य की अपेक्षा वर्तमान को ज्यादा महत्व देते है और वे वर्तमान लाभ की अधिक चिंता करते है तथा व्यय करते समय भी भविष्य की अपेक्षा वर्तमान को अधिक महत्व देते है।

(vii) Difference in Organisation :-

लोकवित्त के सफल संचालन के लिए विद्वान, अनुभवी व्यक्ति तथा शक्तिशाली एवं साधन संपन्न संगठन की जरूरत पड़ती है क्योंकि लोकवित्त की समस्याएँ पेचिदा और उलझन भरी होती है जबकि निजी वित्त के संचालन में इस तरह की संगठन की जरूरत नहीं पड़ती है।

इस तरह, उपरोक्त व्याख्याओं से स्पष्ट है कि लोकवित्त एवं निजीवित्त जहाँ कई समानताएँ है

Scanned by CamScanner

वहीं इनमें अनेक प्रकार की असमानताएँ भी पायी जाती है।

Private Goods and Public Goods

वर्तमान आर्थिक विकास का युग है और इस आर्थिक विकास के युग में सार्वजनिक वस्तु एवं निजी वस्तु बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सार्वजनिक वस्तुओं को सामाजिक वस्तुएँ भी कहा जाता है। इस संबंध में Prof. R. A. Musgrave का कहना है कि —

"सार्वजनिक वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जिनका अंतर निहित गुण सार्वजनिक उत्पादन का माँग करता है।"

ये वस्तुएँ सार्वजनिक अथवा सामाजिक वस्तुओं की पूर्ति करता है। उदाहरण के लिए Defance Administration of Justice इत्यादि। इसकी पूर्ति सरकार के द्वारा ही संभव है और यदि इसकी पूर्ति निजी हाथों में दे दी जाये तो इस पर इतना ध्यान रखना होगा कि स्थिति करीब करीब सार्वजनिक उत्पादन के समान ही हो जायेगा। ठीक इसी प्रकार निजी वस्तुओं को निजी आवश्यकताएँ भी कहा जा सकता है। निजी वस्तुओं के संबंध में कहा जाता है कि :-

Scanned by CamScanner

Public Goods & Private Goods :- (i) Rival in Consumption (ii) Devisibility of Goods (iii) The Principals of Exclusion (iv) Marginal Cost (v) Price determination (vi) Impure public Goods (vii) Decreasing average Cost

"निजी वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जिनका अंतर्निहित गुण निजी उत्पादन का मौका करता है।"

उदाहरण के लिए कागज, पेंसिल, वस्त्र इत्यादि।

अतः, संक्षेप में कहा जा सकता है कि सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई वस्तु को सार्वजनिक वस्तु एवं निजी हाथों द्वारा उपलब्ध कराई गई वस्तुओं को निजी वस्तुएँ कहा जा सकता है।

Distinguish between Private Goods and Public Goods

सार्वजनिक वस्तु एवं निजी वस्तु में अनेक अंतर पाये जाते हैं जिनमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं :-

(i) Rival in Consumption

निजी वस्तुओं से केवल उन्हीं वस्तुओं को संतोष मिलता है जो उनका उपभोग करता है और दूसरों से इनसे वंचित रखा जाता है। उदाहरण के लिए किसी स्थान पर कोई व्यक्ति अपनी गाड़ी पार्क करता है तो उस स्थान से केवल उसे ही संतोष मिलता है क्योंकि दूसरों को उससे वंचित रखा जाता है।

जबकि सार्वजनिक वस्तुएँ एक व्यक्ति द्वारा किए गए उपभोग का लाभ दूसरों के लाभ में कमी नहीं करता अर्थात् सार्वजनिक वस्तु

Scanned by CamScanner

उपभोग विरोधी नहीं होती है, इस संबंध में Prof. Musgrave का कहना है कि:-

"एक शुद्ध सार्वजनिक वस्तु वह वस्तु है जिसका एक व्यक्ति द्वारा उपभोग दूसरों के लिए उपलब्ध वस्तु की मात्रा में कमी नहीं करता यानि सार्वजनिक वस्तु का उपभोग गैर विरोधी होता है।"

(ii) Devisibity of Goods:-

निजी वस्तुओं में विभाज्यता का गुण पाया जाता है क्योंकि निजी वस्तुओं के मूल्य का निर्धारण निजी व्यक्तियों एवं बाजारों द्वारा होता है और जो इसकी कीमत चुकाता है वही उपभोग करता है।

जबकि सार्वजनिक वस्तुओं में ये विशेषताएँ नहीं पायी जाती है क्योंकि वे Indivible होती है। अविभाज्यता का अर्थ वस्तु की संपूर्ण मात्रा समाज के प्रत्येक वस्तु के लिए उपलब्ध होती है और एक व्यक्ति द्वारा इसका प्रयोग करने पर दूसरों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(iii) The principle of Exclusion:-

बहिष्करण का सिद्धांत केवल निजी क्षेत्रों में पाया जाता है। सार्वजनिक वस्तुओं के क्षेत्र में निजी वस्तुओं का मूल्य बाजार में दिया हुआ होता है और जो इसके मूल्य को चुकाता है वही इसका उपभोग करता है अन्य लोग नहीं।

Scanned by CamScanner

(iv) Marginal Cost :-

सार्वजनिक वस्तु एवं निजी वस्तुओं के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि निजी वस्तुओं के संबंध में संतुलन के लिए प्रत्येक व्यक्ति का M.R. = M.C. का होना आवश्यक है।

जबकि सामाजिक वस्तुओं के संबंध में दोनों उपभोक्ताओं द्वारा प्राप्त सीमांत लाभ में भिन्नता होती है और संतुलन के लिए सीमांत लाभों के कुल योग का सीमांत लागत के बराबर होना है।

(v) Price determination :-

निजी वस्तुओं के मूल्य का निर्धारण बाजार द्वारा होता है और इसका उपभोग वही कर सकता है जो इसकी कीमत चुकाता है।

जबकि सार्वजनिक वस्तुओं का मूल्य बाजार में निर्धारित नहीं होता और न ही इसका मूल्य निर्धारण किया जा सकता है। इन वस्तुओं का मूल्य चुकाए बिना भी उपभोग किया जा सकता है अर्थात् मूल्य निर्धारण निजी वस्तुओं के लिए आवश्यक है, सार्वजनिक वस्तुओं के लिए नहीं।

(vi) Impure public Goods :-

व्यवहारिक जीवन में शायद ही कोई ऐसी वस्तु होती है जिसमें या तो शुद्ध सार्वजनिक वस्तुओं अथवा शुद्ध निजी वस्तुओं की विशेषता पायी जाती है अधिकांशतः वस्तुओं में इन दोनों का गुण पाया जाता है और ऐसी वस्तुओं को ही Impure Public Goods

Scanned by CamScanner

कहा जाता है। इस तरह के वस्तुओं में यदि सार्वजनिकता का गुण अधिक होगा तो उसे सार्वजनिक वस्तुएँ कहा जायेगा अन्यथा निजी वस्तु।

(vii) Decreasing average Cost :-

शुद्ध सार्वजनिक वस्तु की एक विशेषता यह भी है कि इसकी औसत लागत घटती हुई होती है इसका कारण यह है कि सार्वजनिक वस्तु अथवा सेवा का आकार बड़ा होता है जिससे उसके उत्पादन में बड़े पैमाने के उत्पादन की मितव्ययताएँ प्राप्त होती है। यदि सार्वजनिक वस्तु या सेवा दोहरी इकाई में प्रदान की जायें तो औसत लागत कम होने के बजाय अधिक होगी। उदाहरण के लिए यदि किसी शहर में जलापूर्ति व्यवस्था एक बहुत बड़े इलाके के लिए हो तो उसकी औसत लागत उस जलापूर्ति की व्यवस्था की तुलना में कम होगी जो एक छोटे - से इलाके के लिए होगी, इत्यादि।

इस तरह, उपरोक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि सार्वजनिक वस्तु एवं निजी वस्तु में उपरोक्त तरह की अनेक अंतर पाये जाते है।

Scanned by CamScanner